श्रीः

प्रस्तावना

ग्रंथकर्ता एक अच्छा परमार्थी कार्य परायण देश हितैषी संसार विरक्त पुरुष है उस ने इस ग्रंथ के अन्दर जाति भेद मत भेद, समाज भेद, देश भेद, धर्म भेद आदि भेदों को छोड़ सामान्य रीति पर सब ही लोगों को (क्या हिन्दु क्या मुसलमान) मिल कर रहने, मिल कर कार्य करने, एक को दूसरे के दुःख में हिन्दु, मुसलमान के अथवा जैन, वैदिक के या सनातन, आर्य समाज के भेद का ध्यान न कर योग देने का उपदेश दिया है इस में कोई सन्देह नहीं कि यदि इस ग्रंथ का देश में पर्याप्त रूप से प्रचार हो जाय तो लोगों के हृदयों में बहुत कुछ शांति का प्रचार हो सकता है लोगों में भाइयों के समान मिल कर कार्य करने का साहस आ सकता है ग्रन्थकर्ता की भी यही अभिलाषा है कि जैसे बने वैसे इस सार्वजनिकहित का लोगों में प्रचार हो इस में उन्होंने कोई अपने लाभ का उपाय नहीं सोचा है कारण कि वह एक विरक्त तथा निस्स्वार्थ जैनसाधु हैं इन महात्मा के देशोपकार के लिये ऐसे प्रयत्न को देख कर आशा है कि हमारे देश के और भी साधु सन्यासी चेतेंगे हम लोगों का कर्तव्य है कि ऐसे महात्मा के भावों में भाग ले कर उन के उत्साह को सफल करें।

मैनेजर धर्म प्रेस

शहर मेरठ

ॐ असिआउसाय नमोनम

भारतवर्ष के धर्मों की ग्रन्थप्रणाली और उसमें फेरफार करने की आवश्यकता



भारतवर्ष-सब से प्राचीन देश है उस में आर्यक्षेत्र, सिंध और गङ्गाके भीतरके देश हैं और काशी, अयोध्या, उज्जयिनी, चम्पा, राजग्रही अनेक नगरियें थीं उनमेंसे अयोध्या और काशी तो कुछ उन्नति पर हैं बाकी की नगरियें प्राय जीर्ण हैं न उन में वह द्रव्य है न उन में ऐसी शोभा है, विक्रम के समय में उज्जयिनी, श्रेणिक के समय में राजग्रही, राम के समय में अयोध्या, नन्द के समय में पाटली पुत्र (पटना) जयचन्द के समय में कन्नौज, कुमार पाल के समय में पाटण (सिद्ध पुर पाटन) आदि नगरियों की जो शोभा थी और जो राजाओं का प्रजा पर प्रेम था जो धर्मात्माओं को दान देनेकी रीति थी जो विद्वानों का सम्मानथा वह अब नहीं है धारा नगरीमें भोजराजा किंवा पटणा में नन्दराजा एक श्लोक बनाने वालेको स्वर्ण मोहर देतेथे विक्रम राजाने चार श्लोकों के बनाने वाले सिद्धसेन दिवाकर को चार दिशा का संपूर्ण राज्य दे दिया था वो समय कहां गया ? स्वप्न हो गया। हाय! भारतवर्ष आज हम तेरी यह क्या दुर्दशा आंख से देख रहे हैं। विद्वान् भी विचारे काशी में पढ कर पंडित हो कर आजीविका के लिये इधर उधर फिर कर दुःखी हो रहे हैं ? शोक !!!

जीवों की रक्षा के लिये कटिबद्ध होने वाला कुमारपाल राजा कहां है ? जिसके राज्य में १८ देश में पशुपक्षी मच्छली किंवा कोई भी निरपराधी जतु न मारा जाता था, बच्चों की माफिक पालन होता था, उन के लिये धर्मात्मा राजा धर्मात्मा सेठ खेत निकाल देते थे जिस से गरीब से गरीब भी गौ भैंस पाल सकता था बिना खर्च गौ रह सकती थी दूध की नदियें चलती थीं बिना पैसे चाहे जितना दूध दही, घी, मित्र के घर से मगा लो। आज वो दशा है कि हमारे बच्चों को छोटी आयु में खुराक न मिलने से सिर्फ दूध चाहिये वो भी स्वच्छ नहीं मिलता उस से ज्यादा मरण होते हैं तो बड़े पुरुषों को पैसा खर्चने से भी दूध कहां मिल सक्ता है अरेरे ! बेटे से भी अधिक प्यारी माता की माफिक दूधपिलाने वाली गौ और बच्चा को पूरा खर्च न पड़ने के कारण कसाई को मारने के लिये बेचने का समय आया है ! कहां गये महावीर प्रभु के समय के आनन्दादि जैन श्रावक जो ८०००० अस्सी हजार गौ पालते थे आज ८० हजार तो दूर रहीं दस गौ पालने वाला भी धर्मात्मा धनाढ्य नहीं दीखता है ? क्या धन कम होने के साथ दया भी हृदय में से भाग गई है ! शरम ! शरम !! शरम !!!

एक भाई दुःखी होता तो दूसरा भाई सर्व संपति देने को तैयार होता था। जाति वाला दुःखी होवे तो उसको धन देकर धनाढ्य बनाते थे सब लोग धन देकर व्योपार में और लोगों को लगाते थे आज हमारा एक बंधु बाहिर से आबरू रखता हुआ भीतर से रात दिन संताप करने वाला आत्मघात

करनेको तैयार होवे तो भी एक पैसे की मदद करने वाला धर्मात्मा पुरुष तैयार नहीं होता जिन मंदिरों में करोड़ों रुपये खर्चे जाते थे उन मंदिरों में खर्च तो दूर रहा किंतु धन से विहीन दुखी लोग विना उपाय मंदिर में से चोरी करने से भी पीछे नहीं हटते विना व्योपार विचारे गरीब लोग सट्टे में जिंदगी निर्वाह करने को तैयार होते हैं और घर बार सब वेच कर स्त्री का गहना तक गिरवी रख देते हैं और अंत में कर्जदार होकर बुरे हाल से मरते हैं अहाहा ! वोभी जमाना था कि विक्रम राजा दिवाली पर सबका कर्ज आप देकर ऋण मुक्त कर देता था आज घर के घर नीलाम होने पर भी कोई मदद करने वाला नहीं है बिना धन कितने ही आत्मघात होते होंगे ! मनुष्यों की भी दया कौन रखता है।

हमारे देश में जो हजारों आदमी व्योपार करने को आते थे तीर्थयात्रार्थी आते थे विद्या पढने को आते थे सर्वत्र इस देशकी प्रसिद्धि होती थी और इस देश को दृष्टि से न देखने वाले अपना जन्म निष्फल मानतेथे उसी भारत वर्षके आर्य क्षेत्र के उत्तम जाति के युवक पुत्र पढने को किंवा व्यापारार्थ विदेश जाने के लिये भाग रहे हैं और निर्धनता से जहां जाते हैं वहीं अपमान पाते हैं और धर्म विरुद्ध जाति विरुद्ध नीच से नीच कृत्य करने को तैयार होना पडता है विदेश में अपमान होने से इस देश में पशु की तुल्य दरिद्रावस्थामें साक्षात् नरक का दुःख पारहे हैं दिन निर्वाह करने का सिगरेट हुक्का भाग अफीम उडाई पीनमें मस्त हैं और मदिरा पान में तमाशे में ख्याल

में दिन व्यर्थ कर रहे हैं रोटी के लिये विद्या पढ़ने वाले विचारे फेल होने पर न इधर के न उधर के रहने से आत्मघात भी करते हैं। एक दिन पैसा न मिले तो भूख से दिन पूरा करना भी मुशकिल होता है। कहां है पूर्वका धनाढ्य भारतवर्ष! कहां है आजका निर्धन दरिद्र विद्याविहीन भारतवर्ष !!!

कलियुग आया संपत्ति भाग जावेगी सब दुःखी हो जावेंगे वह भविष्य वचन ग्रन्थों में लिखना लिखाना शुरु होगया किन्तु जब हम पारिस लंडन युयोर्क की संपत्ति साहेबी देखते हैं तो कलियुग भारत वर्ष में आगया और यूरुप अमरीका में क्यों नहीं यहां के लोग अपमान पाते हैं और वहां के लोग क्यों पूजापाते हैं! यहां के निरुत्साही होगये वहां के लोग बुद्धिमान धैर्यवाले उत्साही क्यों होगये। तो कहना होगा कि यहां के लोगों में एक बड़ा दुर्गुण रोग घुसगया है उस को दूर करने की प्रथम आवश्यकता है।

मैं क्या कर सक्ता हूं अकेला हूं पैसा नहीं है आश्रय नहीं है थोड़ा जीवन है ऐसे जो निर्माल्य वचन हैं उनको शीघ्र दूर कर एक ही परम मंत्र का निरंतर जापकरना चाहिये वो परम मंत्र सुनो —

मनुष्य सब कर सक्ता है कोई भी बात अशक्य नहीं है उद्यमी को सब अर्थ सिद्ध हो जाते हैं। कलियुग नहीं है कर युग है आत्मबल के ऊपर आगे बढ़ो दैविक शक्ति सहायता करने को तैयार है प्रमाद निद्रा कुव्यसन निरुत्साह का छोड़ो सब रिद्धि सिद्धि आप का मिल सक्ती हैं।

आदमी के उत्साहित करने में सब धर्म वाले ऐक्यता करें

तो आगे बढसक्ता है किंतु भारतवर्ष में अनेक धर्म वाले संकुचित वृत्ति धारण कर बैठने से आज हम दूसरे को भाई की बुद्धि से देख नहीं सक्ते न सहायता करते हैं हम घर में ही युद्ध कर निरुत्साही बनगये हैं कैसे आगे बढ सक्ते हैं कैसे हम देशका उद्धार कर सक्ते हैं उस का कारण यह है कि भारतवर्ष में जितने धार्मिक ग्रंथ है उस में एक त्रुटी मालुम होती है वह त्रुटि जब तक पूरी न होवे वहा तक हम कभी भी पार नहीं हो सक्ते वह त्रुटि यह है कि वह हमारे धर्म का नहीं है इस लिये उस को सहायता करने का हमारा फरज नहीं बल्कि जो हमारा शत्रु है उस का कोई भी रीति से नाश होवे तो हम को बडा पुण्य होगा हम कभी मरजावें तो भी हरज नहीं किंतु हम तन मन धन से हमारे धर्म से जो विरुद्ध है उसका जरूर (खंडन नाश करेंगें वही हमारे मनुष्य जीवन का फल है।

यह बात भारतवर्ष में ऐसी दृढ हो गई है कि धर्म के नाम से ही झगडे फैल रहे हैं आज हिंद (भारत) के नाश अवनति होने का मुख्य कारण द्वेष है और अपने को सब उच्च मानते हैं दूसरे को नीच मानते है इस का सुधार होवे तो हमारे भारतवर्ष की दशा सुधरने में क्या देर है ?

हिंदु मुसलमान जो सम दृष्टि से परस्पर को देखें तो हमारा उदय क्यों न होवे कुरानऔर वेदको एक दृष्टिसे देखें तो प्रेम क्यों न बढे भक्तिऔरनिमाजको एक बुद्धिसे देखें तो भ्रातृभाव में क्या देर है परमेश्वर खुदा में एक अर्थ मिलावे तो क्यों दोनों का सर्वत्र मेल नहोवे एक ही अफसोस है कि हम मनुष्यता सीखें ही नहीं हैं 'ऊपर के विचारों से एकपक्षी हिंदु मुसलमान

आश्चर्य होंग कि एकता समानता कैसे हो सकती है एक काशी जाता है एक मक्के जाता है एक सूर्योदय प्रधान मानता है एक चन्द्रोदय प्रधान मानता है एक पुनर्जन्म नहीं मानता एक पुनर्जन्म मानता है ऐसी भिन्नता वाले भला एक कैसे हो सकते हैं ? एसे विचार करने वालों को यह प्रार्थना है कि आप एक देश के रहने वाले एक राज्य की सत्ता में निवास करने वाले एक सूर्य के प्रकाश से अंधकार से दूर होने वाले एक चन्द्र की शीतल शान्ति से आनंद पाने वाले एक मेघ की जल धारा में खेती करने वाले एक नदी के पानी में खेलने वाले एक हवा में रहने वाले होने से जब तुम्हारी समानता इतन बातों में प्रत्यक्ष मौजूद है तो दूसरी बातों में भी समानता करने में विशेष विघ्न नहीं है एक उदार द्रष्टि धारण करने की प्रथम आवश्यकता है

जंगल में जाकर एक हिन्दु सन्ध्या करे एक मुसलमान निमाज पढ़े तो वहां झगड़ा कभी नहीं होता अपने अपने धर्ममें स्थिरता रखकर अपने इष्ट देव की स्तुति करलेगे जो उनके भाव पवित्र हैं तो उसका फल अच्छा ही मिलेगा किंतु यहां पर एक विचार करना चाहिये कि मैं सन्ध्या क्यों करता हू मुसलमान को विचार करना चाहिये कि मैं निमाज क्यों पढ़ता हू बिना विचारे जो बालक माबाप की देखा देखी करतहै उनको अल्पफल मिलता है किंतु बालक किंवा कमअक्ल को छोड़कर जो बुद्धिमान् आदमी है उनको तो अवश्य विचारना होगा कि मैं सन्ध्या किंवा निमाज पढता हू वह इस लिये है कि मै परमेश्वर अथवा खुदा को प्रसन्न करने को चाहता हू ।

परम कृपालु परमात्मा अथवा खुदाको प्रसन्न करने वाले को यह गुण अवश्य धारण करना पडेगा कि खुदा किसके ऊपर प्रसन्न होता है कि जो दूसरे को कोई भी रीति से दु:ख देना नहीं चाहिये तो मैं किसी को दुःख न देऊ जो कोई दूसरे को दु:ख देकर संध्या अथवा निमाज पढेगा तो उस पर खुदा या परमेश्वर कभी भी प्रसन्न नहीं होगा जैसे कि एक राजा के राज्य में रहने वाले परस्पर लडने वाले बदमासो पर चाहे इतनी प्रार्थना से भी राजा उसके ऊपर खुश नहीं होता तो सब राजाओं का राजा परमेश्वर कैसे प्रसन्न होगा वह खूब विचारना चाहिये जो यह बात सच मालूम होवे तो निरंतर निमाज पढने वाले को किंवा संध्या करने वालों को सोचना चाहिये कि मेरे से किसी ने आज दुःख तो नहीं पाया, जो सोचेंगे तो मालूम होगा कि संसार व्योपार में फसे हुए हजारों मनुष्यों को और प्राणिओं को हम दुःख दे रहे है पहिले हमको चाहिये कि हम किसी को दुख देने की बुरी आदत दूर करें राजा को प्रसन्न करें और पीछे परमेश्वर को प्रसन्न करें जो बच्चोंको माता पिता छोटी उम्र से शिक्षा देवें कि बेटा कभी भी किसी को दुख मत दो दुख देने से खुदा प्रसन्न नहीं होता राजा का गुनाह होता है इस लिये किसी को दुख मत दो जो हम मुंहसे ही बोले तो बच्चों पर असर ज्यादा नहीं होता लेकिन जो हम ऐसी चाल स्वीकृत करेंगे तो बच्चों पर अच्छा और जल्दी असर हो सक्ता है किंतु, गृहस्थों को ऐसी बात सिखाने वाले त्यागी धर्म गुरुओं की पहली जरूरत है और त्यागिओं को ऐसा वचन निरंतर निकले इस लिये ऐसे ग्रंथों की जरूरत है और मैं जहां तक देखता हूं वहां तक

वो त्रुटी सर्वत्र मालुम होती है और इसमें सब मजहब वालोंसे मेरी प्रार्थना है कि आप वो त्रुटि पूरी करें और पहिला सूत्र याद रहना कि "हम किसीको कभी भी दुख न देवें" और दिया हो तो हम गुनहगार हैं और राजके दंडके भागी हैं और खुदा के दंड के भागी हैं वो गुनाह अब नहीं करेंगे किंतु हुवा है उसकी माफी तो हमको मागनी पड़गी एक तो जिस को दुःख दिया हो उसकी और दूसरा परमेश्वर की और बड़ा गुनाह हो तो उस दुख भोगने वाले को बदला देना और बड़ा पश्चात्ताप करना और खुदा की माफी ज्यादा देर तक चाहनी ऐसे बदला देने वाले फिर गुनाह नहीं करते न राज्य दंड पाते न नरक (दोजख) अथवा कैद में जाते हैं क्यों क दिल पर जो ऐसा पाठ सिखाया जावे कि तुम किसीको दुःख मत दो तो फिर हिन्दु और मुसलमानके भिन्न स्कूलोंकी जरूरत नहीं है और हिंदू की हिंदी मुसलमान की उर्दू होतो भी कालेज की अंग्रेजी में तो साथ पढ़ने में वोही शिक्षा पहिली मिलनी चाहिये कि हम किसी को दुःख न देवें।

दुःख क्या है?

बच्चों को छोटी उम्र में दुःख का अनुभव स्वयं होने पर भी विचार शक्ति ज्यादा न होने से बराबर मालुम नहीं होता है कि दूसरों का दुःख हम क्या देते हैं रास्ते में चलते चाहे उसकी टोपी उड़ाकर चाहे उसको धक्का लगादवे चाहे उसकी किताब अथवा टोपी फेंकदें उसमें दूसरेको दुःख होता है और अपनेको हंसी आती है और मारना गाली देना तो उससेभी अधिक दुःख का कारण है बात बात में झगड़ा करना मारा मारी करना बुरा है छोटी उम्र में जो बच्चों को सिखाया जावे

कि तुम किसी को मत सताओ और तुम को कोई गाली देवे किंवा भूल से धक्का लग जावे तो भी क्षमा करो मारा मारी करने को कोई आवे तो भी मारा मारी मत करो अपने मास्टर अथवा मावाप की राय लो आप स्वयं मारा मारी से क्लेश मत बढ़ाओ। जो तुम क्षमा करोगे तो तुम्हारा गुनाह दूसरा भी क्षमा करेंगे किन्तु शिक्षक और धर्म गुरु और निमाज अथवा संध्या करने वाला स्वयं खुद आप रोज याद करे कि मैं ने आज कितने गुनाह क्षमा किये हैं और दूसरों को कितना दुःख दिया है, अपने शरीर में जरा दुःख होवे तो आंख में आंसु आते हैं तो दूसरे को जो दुःख हुआ है उसका अपराध कैसे क्षमा होगा ?

मनुष्य की जिंदगी

हैवान और आदम याने पशु और मनुष्य में थोड़ी भेद है आदम की अक्ल ज्यादा है अक्ल का सदुपयोग करना हमारे आदम होने से हमारा फ़र्ज है और जो हम भी पशु के माफिक मारा मारी या दूसरों को पीड़ने का रिवाज रक्खेंगे तो फिर हमारी मनुष्य जिंदगी सिर्फ़ कहने मात्र ही अच्छी है कर्त्तव्य से नहीं है जिस से हम रात को दिन को शांति नहीं पावेंगे, एक आदमी ने धक्का मारा दूसरे ने धक्का खा लिया दोनों चले गये जो धक्का मारने वाला है उसको जरूर चिंता रहेगी कि मेरे को वो न मारे किंतु धक्का खाने वाले को डर नहीं है कि मेरे को धक्का वो मारेगा, धक्का खाने वाले की संध्या अथवा निमाज् सच्ची है धक्का मारने वाले की

निमाज़ जहां तक धक्का खाने वाले की माफ़ी न मांगे वहां तक निमाज़ संध्या झूंठी है संध्या निमाज़ के दृष्टांत से विद्वान् विचार कर सकते हैं कि जनेउ हिंदु डालते हैं सुन्नत मुसलमान करते हैं यज्ञ हिंदु करते हैं मुसलमान कुरबानी करते हैं जनेउ डालने का हेतु यह है कि आज से पशुत्व से मनुष्य हुआ ऐसे ही सुन्नत से मनुष्य हुआ याने आज से धर्म समझने को अथवा खुदा को पिछाननें योग्य हुआ लेकिन जहां तक न समझेगा कि दूसरों को दुःख देने से खुदा की माफ़ी नहीं होती अथवा राजा की शिक्षा दूर नहीं होती, वहां तक वह बच्चा गुनाह करेगा और गुनाह का दंड खुदा का तो पीछे होगा किंतु राजाका दंड यहा हो जायगा।

जनेउ डालने वाले अथवा सुन्नत किये हुए जो कैद में जाते हैं फांसी जाते हैं लोगों का तिरस्कार पाते हैं उससे क्या जनेउ अथवा सुन्नत उस को बचा सकती है या नहीं जो नहीं बचा सकती तो फिर जनेउ और सुन्नत का क्या फल हुआ मेरे ख्याल से तो जनेउ अथवा सुन्नत पर जो धाम धूम होती है और उत्साह आता है वह सब कम करके छोटी उम्र से ही बच्चों को ऐसी शिक्षा दी जावे कि वे मन में भी दूसरे को दु'ख देने का विचार न करें न मारा मारी करें न गुनाह करें किंतु क्षमा करने की आदत रक्खें ऐसी अच्छी चाल सिखा कर जो जनेउ देवे अथवा सुन्नत करे तो अच्छा है।

हमारे हिंदु भ्राता अथवा मुसलमान भ्राता यज्ञ करे अथवा कुरबानी करे उनको प्रार्थना है कि १०० यज्ञ कर और

१०० कुरवानी करे फिर वह पुरुष राजा का गुनाह करे तो उसको क़ैद मिले वा नहीं जो शिक्षा होवे तो फिर यज्ञ अथवा कुरवानीसे क्या हुआ जो राजाकी शिक्षा होती है नहीं छूटती तो फिर हिंदु वा मुसलमान को खुदा की शिक्षा क्यों न होगी इस लिये चाहिये की यज्ञ अथवा कुरवानी की जरूरत नहीं है बल्कि यह जरूरत है कि हिंदु मुसलमान यज्ञ अथवा कुरवानी न करें किंतु दूसरों को दुःख न दें तो राजा का दंड न होगा तो परमेश्वर का दंड कैसे होवेगा। क्या राजा के यहां इनसाफ है और परमेश्वर अथवा खुदा के यहां न्याय नहीं है हमारे दोनों भ्राता परस्पर प्रेमदृष्टि से देख कर दूसरोंको दुःख देना छोड़ देवें तो चाहे मुसलमान का लड़का हो चाहे हिंदु का हो किंतु दोनों साथ बैठने को साथ खेलने को साथ फिरने को साथ राज्य करने को साथ शादि में किंवा हरेक कृत्य में मिल कर करेंगे चाहे संध्याकरें चाहे निमाज पढ़ें चाहे दोनों न करें किंतु राज्य के गुनाह में न आवे न दूसरों को, दुःख देवें व ही सर्वोत्तम मार्ग हमारे लिय है।

साथ खाना हो अथवा कन्या व्यवहार होतो अधिक फायदा है जैसे कि अकबर ने चाहा था और ऐक्यता की जड डाली थी किंतु वह भी कुछ हरज नहीं हैं क्योंकि जिस समय पर दूसरों को दुःख देने का पाठ सीखेंगे उसी समय वे समझ लेंगे कि जीवमात्र सुखके अभिलाषी हैं हम क्यों गौ बकरे भैंसे को दुःख देकर मार कर खा जावें। क्यों शिकार करें क्यों पास का पदार्थ लेवें हमारा फर्ज है कि हमको दूध देने-

वाले हमारा बोझा उठाने वाल हमारे सुख के लिये जीवे वहां तक काम आने वाले पीछे हड्डी चमड़ाभी उपयोग में आने वाले पशुवों को सतावेंगे बालपन से जो रहम भीतरहै वह कभी भी दूर नहीं होता कितने ही मुसलमान भ्राताओं ने मेरे पास रहम की बात सुनाई है वे मांस नहीं खाते न दुःख देते ग्वालियर लश्कर में म्युनिसिपलिटीके चेअरमैन सुलीमान साहब जो अच्छे विद्वान् धर्मात्मा हैं उन्होने गत वर्ष में जीव दयापर जो लेक्चर थीएटरमें दियाथा वे एक सचे दिलके रहम करने वाले हैं और ऐसे अनेक सच्चे मुसलमान हैं जो निमाज पढ़ते हैं और पशु नहीं मारते और ऐसा नियम भी नहीं है कि जो पशुमारे वोही मुसलमान है और गुनाह करे वो छूट जाता है, आंख से देखो कि गुनाह करेगा तो राज्य दंड होगा कि नहीं और जब राज्य दंड होगातो खुदाकैसे छोड़ेगा कोई झूठ बोलकर गुनाह से बचनेको चाहेगा वह कभी छूट भी जावे किंतु खुदा से कभी नहीं छूट सक्ता चाहे दोजख वा नरक प्रत्यक्ष आंखसे न दीखे किंतु गुनहगारों को राज्य दंड से बचने को जो दूसरे पाप करने पड़ते हैं वो भी नरक से अधिक दुःख देने वाले हैं इस लिये मांस खाना मुसलमान के लिये फरजीआत नहीं है ऐसे ही हिंदुओं के लिये पशु खाना बहुत बुरा होने पर भी देवी के बलि नाम से जो राक्षसी दिखाव होता है और देवी को प्रसन्न करने को चाहते हैं उसको भी यह पूछना पड़ता है कि हिंसा करके गुनाह से यहां बच सक्ते हो या नहीं जो राज्य दंड से यहा बचन ना परमात्मा के दंड से कैसे बचोगे

विचारवान् पुरुष तो आप ही समझते हैं और बुद्धि कम होने से जडों के पीछे जो करते हैं उनको समझानेसे कितनें ही दयालु पुरुषों ने देवी के सामने पशु मारना बंद किया है देहली फीरोज पुर कानपुर में देवी के सामने हिंसा बंद होगई है और कोई नहीं मानता तो मेरी हरज नहीं, करेगा सो भरेगा मैं तो चाहता हूं कि अच्छे हिंदु और मुसलमान लोग सर्वत्र प्रेम बढ़ा कर एक होकर दूसरों को दुःख देना छोड कर देश का भला करें एक बाप के दो बेटे मिल कर रहवें प्रेम से मिलें और एकएक को दुःख में सहायताकरें टटा न करें लोक में जरा भी बेइज्जती न करें तो वह बाप दोनों बेटों को अच्छा मानकर प्रसन्न होताहै कि सबको ऐसे अच्छे बेटे मिलें ऐसे ही हिंदु मुसलमान मिल कर जो रहेंगे तो नामदार पवित्र न्यायी सरकार नवाब राजा प्रसन्न होगा और तुमको साबासी के साथ राज्य का अधिकार देगा क्योंकि बाप बेटे में विश्वास होजाने पर योग्यता की पिछान होती है और पिछान होने से योग्य अधिकार दिया जाता है हमारें भारतवर्ष के दोनों भ्रातावों ! योग्यता की कदर कर सर्वत्र मिल कर रहोगे तो राज्य के ऊंचे होदे पर बैठ कर सत्ताधीशों को प्रसन्न करोगे जिसने यहां राजा को सुख दिया प्रसन्न किया वो खुदा को भी प्रसन्न करसक्ता है राज्यद्रोही गुनेहगार परस्पर झगडे करने वाले यहां राज्य दंड पाते हैं वे खुदा के घर में भी वो ही शिक्षा के योग्य होंगे किंतु मा बाप का फरज बच्चों को सुधारने का है ऐसे ही राजा का फर्ज है कि सर्वत्र मदर्सा

स्कूल बना कर शुरुतपढ़ा कर पहली यह शिक्षा दे कि किसी को दुःख मत दो न आपस में टंटा करो ।

विद्या सब में माननीय है हिंदु मुसलमान दोनों विद्या को चाहते हैं किंतु निर्धनता से विद्या पढ़न में विघ्न आता है इस लिये व्यर्थ खर्च सब दूरकर विद्या में विशेष धन लेना चाहिये और जहां हिंदु की ज्यादा सख्या हो वहां हिंदु ने साथ मुसलमानों को भी उत्तेजन देकर साथ लेना चाहिये जहां तक हम एक दृष्टि से नहीं दखेंगे वहां तक हम आदमी के योग्य नहीं हैं सिर्फ पशु हैं जो एक दो जगह हिंदु मुसलमान न मिलकर काम किया तो एक के पीछे दूसरा चढ़कर गांव गांव में मिल कर काम होगा गवर्नमेंट स्कूल खोले, चाहे न खोले किंतु जो दो मिलकर प्रेम बढ़ाकर स्कूल खोलें तो विना विलंब विद्या बढेगी मैंने हिंदु मुसलमान के मेली स्कूल खुलवाए हैं जिस में आम लोग सामिल हैं और वहां लड़कोंके पास फीस नहीं ली जाती है तो लड़के बहुत आते हैं सिर्फ गांव में अच्छे लोगों को समझा कर यथायोग्य चंदा लिया जाता है स्कूल ही नहीं साथ लाइब्रेरिये भी खुलवाई हैं और मुसलमान भ्राताओं ने मेरे कहने से मांस खाना भी छोड़ दिया है और वर्ष में अमुक दिन तक जीव हिंसा करना भी बंद किया है जो प्रेम दृष्टि स ऊंच दृष्टि से दोनों मिलें तो ऐसा कोई दुष्ट हृदय का नहीं है कि अपने हाथ से अपने पांव में कुहाड़ामार कर लगड़ा होगा ? दोनों आंख बरोबर हैं दोनों हाथ बरोबर हैं तो भला हिंदु मुसलमान में कैसे भेद हो सक्ता है ।

जो हमारे बच्चे सिर्फ लिखना पढ़ना गणित भूगोल इतिहास सीखलेवें तो आज काम नहीं चलेगा दूसरे देशों ने विद्या हदसे ज्यादा बढादी है वे सब हुनर अपने देश में बनाकर यहां भेजते हैं वे चीजें अच्छी होने से हम लेते हैं और निर्धनता में डूबते हैं ऐसीचीजे अच्छी बनानेको वैसीही विद्या बच्चोंको पढ़ानी चाहिये किन्तु पैसे वाले के लड़के पढ़ते नहीं और गरीब के पास पैसे नहीं उससे हम हिन्दु और मुसलमान दोनों को प्रार्थना करेंगे कि हरेक गाव में एक " विद्या उत्तेजक फंड" खुलना चाहिये और उसमें हरेक शादी किंवा खुशी के दिनपर यथाशक्ति रकम लना चाहिये और फंड में से गरीब के लड़कों को फीस किताबें देकर आगे बढाना चाहिये उस में जो लड़का अच्छा हो उसको पहिला उत्तेजन देना चाहिये हिन्दु मुसलमान का भेद नहीं रखना चाहिये सिर्फ उसकी होशियारी देखनी चाहिये विद्या उत्तेजन कमेटी के साथ एक ऐसी कमेटी होनी चाहिये कि हिन्दु मुसलमान में कोई भी कारण से टंटा न होने पावे दोनों तरफ से पंच होकर टंटा मिटा देवें पहिले ऐसे टंटे मिटाने वाले होने से इतने वकील भी नहीं थे न इतनी पाय माली थी आज तो एक जिदके खातिर१००) के खातिर हजार गंवाते हैं रात्रिका अंधकार इतना भारी होता है कि वो अंधकार दूर कैसे होगा ऐसी शंका भी हो जावे तो भी जब सूर्योदय होता है तब रात्रि का अंधकार भय चोर सब भाग जाते हैं ऐसे ही हमारे देश में विद्या बढेगी हृदय में प्रेम बढेगा तो शीघ्र ही क्लेश और द्वेष मिट जावेगा और हम साथ बैठकर एक बाप

वे घट का समान सब कार्य कर सकेंगे।

उदारवृत्ति और कृपण सङ्कुचित वृत्ति सर्वत्र है दोनों युक्ति में लगाकर जोड़ने तोड़ने का प्रयत्न करेंगे अथवा करते हैं किंतु सबसे और भी प्रार्थना है कि कच्चे सूत के तांत जोड़ने में उनको कितनी देर लगती है और जब उसकी रस्सी बनाते हैं तो साथ मिले हुए सूत के तांतों का कितना जोर होता है वो देखो आप लोग जो अपना भला चाहो तो पहिले दूसरों का भला करो और जो आप उस मूजिब नहीं करोगे तो सब धर्मोंका मूल मंत्र जो खैरात (दान) है वो उड़ जावेगा।

वस्तुपाल तेजपाल दोजैन भाई राजा के वजीर थे उन्होंने सब धर्मके मंदिर बनवाये इतनाही नहीं किंतु मुसलमानों की मसजिद भी बनवादी है।

परोपकार करना सूर्य, चंद्र, पेड़, मेघ अपनेको सिखाता है वे हिंदु मुसलमान का भेद न रख कर जीवमात्र को सुख देते हैं तो हम धर्म को मानने वाले परमात्मा की भक्ति करने वाले क्यों उपकार न करेंगे।

दु:ख न देना वो तो अपना एक कर्तव्य है किंतु जहांतक हम परोपकार न करें वहां तक जीने के योग्य भी नहीं हैं क्योंकि सूर्य का ताप या वृक्ष की छाया फिरती रहतीहै ऐसेही लक्ष्मी की शक्ति सत्ता भी फिरती रहती है राजा के रंक और रंक के राजा आंख ही आंख से देखलो और रोगी अच्छे होते हैं और अच्छे रोगी होते हैं आज शतरपौशा है कल वह

क़ैद में जाता है सिपाही का लड़का सब से अव्वल दरजे का अमलदार (हाकिम) होता है जो परोपकार की रीति न हो तो अनाथ बालकों का अनाथ वृद्धों का बूढी विधवाओं का रोगियों का पोषण कहां से होता आज धर्मशालायें कूवे और पेड़ों की छाया कहां से होती है और बिना परिश्रम माके स्तन में दूध आता है पेड़ फल देता है मेघ पानी देता है राजा धर्मात्मा मिलते हैं वो नहीं मिलता इतना ही नहीं किंतु सूक्ष्म बुद्धि से हम देखेंगे तो मालूम होगा कि अच्छे मा बाप के खान दान में जन्म लेना अच्छे मास्टर पढ़ाने वाले मिलना अच्छे मित्रों की सोबत मिलनी दूसरे जीवों को दुःख न देना सत्य बचन बोलना किसी की चुगली न करना किसी का अपमान न करना बड़ों की इज्जत करना राजद्रोह न करना शराब जुआ चोरी न करना रंडियों का संग न करना बिना विचारे आमदनी से अधिक खर्च न करना दूसरों को सहायता देकर प्रेम बढ़ाना ये सब उत्तम बातें अच्छा प्रारब्ध अर्थात् पूर्व जन्मके पुण्य विना नहीं मिलतीं विचारे जो बे नसीब याने पापी होते हैं वे दुष्ट जगह पर जन्म लेकर दुष्ट सोबत में फंस कर शराब पीकर जुवा खेल कर चोरी करके क़ैद में जाते हैं राज्य द्रोह कर देशनिकाला पाते हैं आपस में अनुचित लिख कर सरकार की शिक्षा पाते हैं वे स्वर्ग नरक याने बहिश्त और दोजख़ का फल यहां पाते हैं।

जो धर्मात्मा हैं निमाज पढते हैं और अपने को खुदा का बंदा मानते हैं या जो संध्या करते हैं और अपनेको परमात्माका भक्त मानतेहैं उनके लिये इतना लिखना उचितहै कि जिससे परस्पर

में भरके वही विचार करें वही वचनबोलें वही लेख लिखें हिंदु मुसलमान में जो निर्धनता मेरे देखने में आती है और गरीबी से रात दिन भारतवासी दुःख भोगते हैं। और अंदर की हालत देखते है तो कहना पड़ता है कि गरीबों की रोजी के लिये कुछ ऐसे धधेनिकालने चाहिये कि वे बिचारे मजदूरीकरें। और पेटभरलेवें किंतु रुपये बिना ऐसा होना मुश्किल है इस लिये एक प्रार्थना है कि जो पैसे काली माता के पुतले बनाकर गंगा में विसर्जन करते हैं और गणपति की मूर्ति बनाकर समुद्र में समर्पण करते हैं और मुहर्रम में ताजिए बनाकर योग्य स्थान पर रखते हैं और खर्च में कुछ रकम कम कर पैसा बचा कर गरीबों को रोजी के लिये उद्यम किया जावे तो बहुत उपकार होगा कोई कहेगा कि ऐसी धार्मिक बात में आप को क्यों विघ्न डालना चाहिये उस का समाधान यह है कि बजुर्गों की सेवा करनी बच्चों का धर्म है और बच्चों का पालण करना बजुर्गों का काम है जो बजुर्गों के लिये बच्चे करते हैं वे बच्चे जो बहुत दुखी होवें तो बच्चों का निर्वाह करने को भी कुछ देना यह बड़ा उत्तम काम है जो त्यागी धर्म गुरु या फकीर ऐसा उपदेश देना शुरू करेंगे अथवा ग्रंथ लिखेंगे तो धर्मात्मा दयालु हिंदू मुसलमान जरूर कुछ न कुछ गरीबों के लिये निकालेंगे और धूम धाम का खर्च कम करेंगे।

खैरात (दान) में फेर फार की जरूरत

हिंदू वा मुसलमान रोज खैरात करें उनको खैरात लेने वाले की तलाश करनी चाहिये कि वो पीछे क्या करते हैं जो

अपंग होवे अनाथ होवे तो उनका आश्रम अलग होना चाहिये और उनके योग्य काम देना चाहिये रोगियों के लिये कुछ कार्य की आवश्यकता नहीं है वे सब छोड़ कर लष्ट पुष्ट होने पर सिर्फ भंग खा कर प्रमाद में दिनरात पूरा करते हैं उनके लिये एक तो विद्याभ्यास दूसरा सदुद्यम है अब जितने साधु फकीर हैं वे मेहनत मजदूरी नहीं करेंगे उनके लिये धर्मोपदेश और विद्या प्रचार का कार्य होना चाहिये और वे इधर उधर फिर लोगों को सहायता देवें इस लिये उनको पहिले एक स्थान पर पढाना चाहिये उन की पढाई में अमुक धर्म सच्चा है अमुक पुस्तक सच्चा है अमुक झूठा है अमुक ग्रंथ अमान्य है वह सब छोड़ कर सिर्फ वोही उपदेश उनके मुंह में से निकलना चाहिये कि किसी को दुःख मत दो झूठ मत बोलो हँसी मत करो निरंतर विद्या पढो अच्छे पुस्तकों का संग्रह कर वांचो गाली मत दो गुस्सा मत करो गर्व मत करो कपट बदमाशी विश्वासघात मत करो अपनी औरत में संतोष रक्खो दूसरी औरत की संगत न करो हिंदू मुसलमान ईसाई यहूदी सब भाई हैं राजा बादशाह नवाब अपने रक्षक हैं उनके हुक्म के खिलाफ मत चलो अपने मंदिर मसजिद देवल स्थानक उपाश्रय औषधालय में जाओ वहां परमेश्वर खुदा से यही प्रार्थना करो कि हम सब धर्म वालों से प्रेम से मिलेंगे पास बैठेंगे किसी को म्लेच्छ नास्तिक काफिर मिथ्यावादी त इत्यादि कटु वचन नहीं कहेंगे उदारवृत्ति रख कर परस्पर सहायता करेंगे रोटी के टुकड़े में से भी टुकड़ा कर

दूसरों को खिला कर खावगे अपाग अनाथ अयाचक बैल गऊओं भैंस बकर मुरगे बंदिये का नहीं मारे गे नहीं सतावेंगे नहीं ज्यादा बोझा डालें गे नहीं उनको धूप में दौड़ावेंगे जैसी अपनी जान अपने को प्यारी है ऐसी उन की मानकर उनको पाल गे। तीतर कबूतर तोते को कंकर पत्थर नहीं मारेंगे शिकार नहीं खेलेंगे निर्दोष जीवों को दुःख नहीं देंगे माता देवी अथवा खुदा के नाम पर हम अपनी जान बरबाद करेंगे न कि निर्दोष हैवान के बच्चों के गले काटेंगे रहम सब की माता है रहम सब का जीवन है रहम खुदा का बड़ा है रहम जीवों का रक्षक है। रहम रखने वाला रहमान को प्यारा है ऐसा ही हिंदुओं को सोचना चाहिये।

दया धर्म का मूल है दया सुखों की खान है, दया के ऊपर सब का जीवन है दया परमात्मा की प्रियतमा है दयासे विहीन अपने बच्चों को माता पिता को औरत को भाईको मार डालता है और दया से भरा हुआ कोमल हृदय वाला धर्मात्मा शत्रु के ऊपर भी रहम (दया) रखताहै रहम जान बचाता है किंतु रहम अथवा दया ज्ञानी में होती है बिना ज्ञान पशु समान होकर जरा जरा में गुस्सा लाकर टंटा करता है मारा मारी करता है कचहरी में जाता है वकीलों का घर भरता है सबको सताता है आप दुःखी होता है दूसरों को दुःखी करता है इस लिये ज्ञान देना आवश्यक है हिंदु मुसलमान में जो प्रेम बढ़ाना चाहे वह पहिले विद्या बढ़ावें किंतु जहां तक औरतें न पढ़ेगी वहां तक सिर्फ आदमी अकेले कुछ नहीं कर सके

इस लिये लडकियों की पाठशाला के साथ औरतों की पाठ शालायें बनानी चाहिये पूजा करें उसमें फूल चढावें चाहे बुजर्गों की कब्र पर फूल चढावें चाहे कहीं भी फूल न चढावें चाहे घंटा बजावें चाहे बांग पुकारें चाहे कुछ भी न करें उन सबको इतना ज्ञान अवश्य देना चाहिये कि हम जो बाग पुकारते हैं या घटा बजाते हैं वह क्यों बजाते हैं ख्याल रखना चाहिये कि खुदा परमेश्वर सोता नहीं है कि उसको जाग्रत करें किंतु हम या हमारे भाई जो घर धधे में खुदा को भूल गये हैं या नींद लेते हैं या खेल रहे हैं या बातों का रस ले रहे हैं या तमासे में मौज उडा रहे हैं उन सब प्रमादी आलसी जीवों को जाग्रत करने को घंटा बजता है बांग होती है उन को उस बांग वाले का उपकार मान कर शीघ्र अपने धर्म स्थान में बदगी को जाना चाहिये किंतु बदगी करने के पहले या पीछे विचार लेना चाहिये कि मैंने आज कुछ गुनाह तो नहीं किया किसी को दु ख तो नहीं दिया किसी की चोरी तो नहीं की मैंने आज झूठतो नहीं बोला किसी की कोई चीज तो भूल से नहीं रखली मैंने दौड कर अधा होकर किसी छोटे जतु को तो नहीं मारा इन सब बातका विचार करने वाले की बदगी सफल है ना खुदा का डर है न राजा का डर है।

मुसलमानों की अरबी हिंदुओं की संस्कृत जैनों की माग धी भाषा में धर्मसूत्र हैं उन की अच्छी बातें समझ में आवें इस लिये हिंदी उर्दू भाषा में सब का तरजुमा हो जावे अथवा उस में से अच्छी बातों का सार लेकर छोटे ट्रैक्ट निकाले जाव

तो परस्पर की अच्छी बातें समझमें आवे जैनियों के उत्तराध्ययनसूत्र का एक २ अध्ययन जो बच्चों को शिक्षा के लिये समझाया जावे तो मालूम होगा कि वो एक रत्नों का खजाना है पहिला अध्ययन जो विनय का है उससे जिनका अर्थ हिंदु अच्छी तरहसे समझते हैं कि बच्चे उठकर सुबह में अपनी माता को नमस्कारकरे और जोबच्चे छोटे उमरसे माबापोंको नमस्कार करें तो पीछे भविष्य में व सामने नहीं बोलेंगे और आज्ञा से विरुद्ध नहीं चलेंगे आज कितनेक युवक पढकर अपने मा बापों की सेवा नहीं करते वो बहुत बुरा है माता पिता की जिंदगी पर्यंत सेवा करनी वो बड़ा पुण्य है चाहे हिंदु हो चाहे मुसलमान हो किन्तु जो बच्चा मा बापों की जिंदगी तक सेवा नहीं करता खाने को नहीं देता कटु वचन कहता है सताता है वो बच्चा नहीं है किंतु वो कट्टरशत्रु है चाहे पढा भी हो लेकिन उसकी विद्याकी प्रशंसा न करनी बड़े भाई विद्या गुरु धर्म गुरु और परोपकारियों की भी सेवा करनी बच्चों का नेक फरज है मा बाप राजा धर्मगुरु की भूल होवे तो भी बच्चों को चाहिए कि नम्रता से उनको समझावे क्योंकि बच्चा भूलता है बुजुरग नहीं भूलते तो भी सर्वज्ञ सिवाय सब भूलते हैं इस लिये बच्चों को माता पिता की भूल मालूम पड़े तो विनयसे योग्य समय पर प्रार्थना कर समझाना चाहिये गुजरात में दलपतराम कवीश्वर ने सामदार सरकार के आश्रय से गुजराती भाषा में जो कविता बनाई है वो बच्चों के लिये बड़ी हितकारक है और छोटे बच्चों के सामने खुद मा बापों को भी अपनी चाल अच्छी रखनी

चाहिये हवा पानी का असर जैसा पौदों पर होता है ऐसे ही मावापों का असर बच्चे पर होता है तोते के दो बचों की वात शिक्षा खूब देतीहै यह खास याद रखनी चाहिये १००वर्ष के वृद्ध मा बाप अपाग हो कर जो घरमें पडेहों तो उनके पुत्रों को चाहिये कि उनको परमेश्वर मान कर उनकी पहिले सेवा करे उनका आशीर्वाद लेवे उनके चरणों में मस्तक झुकावें तो बच्चे बिना कहे भी सीखलेवेंगे जैसे मा बाप की सेवा जिंदगी तक है ऐसे ही पढाने वाले विद्यागुरु की और सद्बोध देने वाले गुरु की जिंदगी तक सेवा करनी चाहिये।

लोग कहते है कि हमारा उद्धार होगा कि नही हमारी तरकी होगी कि नहीं हमारे बाप दादों का धन हम को प्राप्त होगा कि नहीं उन सब को एक ही उत्तर है कि जरूर तुमारे बाप से अधिक तुम को संपत्ति सुख मिलेगा किंतु खेती करने के पहले जमीन सुधारना चाहिये तो तुम्हारे मगज (चित्त) में शांति, धैर्य, उदारता, त्यागवृत्ति, कोमलता, सरलता, क्षमा ब्रह्मचर्य इत्यादि गुण प्राप्त होना चाहिये जो तुम कपट करोगे विश्वास घात करोगे, राजद्रोह करोगे, दगाबाजी करोगे, तो तुम को संपत्ति हरगिज नहीं मिलेगी और न सुख मिलेगा न इज्जत मिलेगी न निमाज सध्या काम आवेगी अफीममरनेके वास्ते खाकर मुंह मीठा करने को गुड की टुकडी खावे तो वह बच नहीं सकता वो जरूर मरेगा और गुड तो ऊपर से ही मीठा है भीतर तो जहर ही व्याप्त होगा आप किसी को ठग कर दुखी कर पैसे वाले होकर बडे अमलदार अथवा मान अकराम वाले होजावोगे

किन्तु यह सब ऊपरकी मिठास है भीतर तो तुम्हारे लिये फटकों का मार और बड़ी कैद की शिक्षा तैयार है धन बहुत बड़ी चीज है बिना धन कुत्ते से भी अधिक दुःख निर्धन मनुष्य पाता है इस लिये नीति से धन अवश्य गृहस्थों को मिलना चाहिये किंतु धन आज मिलना बड़ा दुर्लभ है सट्टा करते हैं या लोगों को ठग कर खा जाते हैं या चोरी कर ले जाते हैं, वे छोड़ कर बाकी के जीवों को धन पैदा करना बहुत मुश्किल है चूहड़े चमार का धंधा छोड़ कर बाकी सब हुनर बंद हो गये हैं उसका सबब एकही है कि इस देश में सायन्स और टेकनिकल ज्ञान बहुत कम है और उन दोके सीखने में धन बहुत चाहिये नामदार सरकार मा बाप हैं वो भी ख्याल रक्खे और धन वाले पुरुष स्वयं लाखों रुपये देवे और उनकी रानिये जेवर निकाल विद्या पढ़ाने में देवे तो काम चल सके दो युनिवरसिटी दो भाइयों ने निकाली हैं उसका हेतु यहही है कि अब सायन्स टेकनिकल कोलेज बच्चों को देंगे और रोटी से दुःखी नहीं रहने देंगे और पेरिस लंडन न्युयार्क के समान धन वाले हिंदके छोटगावों कोभी (धनाढ्य) बनावेंगे यह हेतुहै वह पूरा होजाव इस लिये अपने धर्मस्थानोंमें निरंतर परमेश्वर से यह प्रार्थना करनी चाहियें।

जो महंत गुरु गुसाई मठ वाले मंदिर वाले करोड़ों का धन लोगों का धर्म के नाम से लेकर मौज उड़ाते हैं और उन की सेवा करने वाले दुःखी होते हैं उनके उद्धारार्थ जो वे धन देवेंगे तो बहुत उपकार होगा गृहस्थ मजदूरी कर धन

करतेहैं और धनप्राप्त करके तारकनाथ पालित बाबु, अथवा मगर जी ताना, अथवा रासविहारीघोस, माफिक धन देनेवाले धर्मात्मा हैं तो धर्म किंवा परमेश्वर के नाम पर भोले लोगों का समझाकर परमेश्वर के पुत्र अथवा अवतार बन कर जो धन विना प्रयास लिया है उस में से $\frac{१}{४}$ भी देंगे तो भारत का बड़ा उपकार होगा क्योंकि अब तो अन्ध श्रद्धा दूर होगई है और ज्यों ज्यों विद्या बढगी त्यों त्यों मायावियों का जाल जाहिर होगा और जो दान प्रणाली चल रही है और हजारों भिक्षुकों का निर्वाह होता है वह सब बंद होजावेगा। आर्यसमाज तो आज से ही उसका खण्डन कर रही है स्वामी नारायण का टंटा कोर्ट में गया है दो महन्तों के खून भी हो गये हैं इससे धन पर अनेक भय हैं उन से निवृत्त होने का एक ही उपाय सर्वोत्तम है कि नामदार सरकार और धनाढ्य श्रीमानों के साथ वे महन्त जी भी अपना धन विद्याप्रचार के लिये देते हैं और दुखियों का दुःख दूर करें।



एक प्रशंसनीय कार्य

—>o<—

इसको पढ़ने में परम संतोष होता है कि सदुपदेश सुन कर धनाढ्य भाइयों का विद्या पर ख्याल हुआ है और जो अच्छा उपदेश दाता हो तो योग्य रकम विद्यादान में खुशी के समय पर लोग देने लगेंहैं हापुड़ के पास करनला और अनवर पुर छोट गांव हैं वहां ता० १४ वीं दिसम्बर को उपदेश देकर वहांके रहने वालोंसे पब्लिक फ्री हिन्दीउर्दू स्कूल गांवके चंदे से खुलवाया है करनले में इस समय ५१ लड़के पढते थ बिना मकान इधर उधर मारे मारे फिरते थे पढने में हरज होता था वहां अभी ज्येष्ठशुदि पचमीके रोज सेठ ऋषभ दास जी के वहां दहली वाले जौहरी दिलेर सिंह टीकम चद जी की बरात आई थी वहां विद्या दान के लिये प्रार्थना की गई बरात में सेठ जी के घर जो महाशय आयेथे उन्होंने सदुपदेश सुनकर यथाशक्ति दानदिया यांय१७०) एकसौ सत्तररुपये ज्येष्ठशुदि ६ के रोज हो चुके थे और मकान के लिये जमीन सेठ ऋषभदास जी ने मुफ्त दी है जो १७गज चौडी २०गज लांबीहै बिंदराजा के बाप ने ३१) रुपये दियेहैं वो खास विचारने योग्य है जो इस तरह से हरेक विवाह में उपदेशक जावें और सद्बोधदेवें और घर राजा के पिता सज्जन यथाशक्ति दानदेवें तो बहुत अच्छा है उसके साथ यह भी कहना ठीकहोगा कि जो रंडी के बदले लड़कों के तमासे का रिवाज विवाहों में शुरू है वो भी नाहक खर्च का बोझा है और फुलवाड़ी लुटाते हैं वो तो दोमिनिट

का व्यर्थ खर्च है उसके मिटाने की बहुत जरूरत है एक जगह पर एक पुण्यवान् आत्मा मन हटाकर लोगों का धन ? समझकर फजूल खर्च बचाकर विद्या दान में ज्यादा दें हमारा भारत वर्ष आज जिस दुर्दशा में है वह नहीं ठैरेगा।

एक विशेष खुशी की बात है कि आज कितनेक लोग भारतवासी वा ओनेरेरी उपदेशक विद्याप्रचार के लिये फिर रहे हैं किन्तु जहानक एक पक्ष का आग्रह रख कर उपदेश देंगे वहा तक हमारे देश का जाति भेद धर्म भेद न मिटेगा किंतु सब दि छोडकर सिर्फ जहां जावें वहा विद्याके स्थानों की उत्तेजन लावें और एक उपदेशक वे होने चाहिये कि जो वहा सभ्या शासन की हैं उनको उत्तेजन दिलावें जो ऐसा करेंगे तो आज उपदेशक के अभाव में कितनी एक संस्था वर जाति हैं वा कायम होगी ॥

—०—

भारतवासी वा दयालु सज्जनों से प्रार्थना

भारतवर्ष की भीतर की दुर्दशा देख कर हृदय आर्द्र हो जाता है मन दिलगीर होता है धर्मकार्य अच्छे नहीं लगते जैसे कि एक छोटे जन्तु को भी दुःखी देखकर दयालु पुरुष को कुछ भी अच्छा नहीं लगता इसी प्रकार आज हमारे भारतवर्ष के करोड़ों आदमी वा औरते वा बच्चे दुःखी होते हैं उन के धर्मायनी पशु निर्धनता से कसाइयों के हाथ से मारे जाते हैं पढ़े हुवे भी नौकरी के लिये तिरस्कार पा रहे हैं तो अनाथ विधवा वा दुःखीओं का कैसे शान्ति मिल सक्ती है ? इस लिये हमारे भारत वर्ष के विद्वान और धनाढ्य पुरुषों से प्रार्थना है कि आप भारत वर्ष की निर्धनता दूर होने के लिये विचार क्यों नहीं करते ? जो

नहीं करोगे तो फिर तुम्हारी सम्पत्ति और बुद्धि का फल क्या होगा । कहा है कि—

परोपकाराय सतां विभूतयः ।

याने जो कुछ अच्छी चीज मिली है वह सब परोपकार के लिये ही है ।

इस लिये मैने अपनी बुद्धि के अनुसार नामदार बृटिश सरकार की छत्र छाया में सद्बोध रूप परोपकारार्थ—

सार्वजनिकहित

लिखना प्रारम्भ किया है चार भाग बाहर पहुंच चुके हैं पांचवां प्रेस में है छठा आप के हाथ में है और भी निकलते रहेंगे और प्रत्येकमें कोई जाति का भेदया धर्मका भेद नहीं रहेगा। एक कुटुम्ब में जो एकता रहेगी तो सब सम्पत्ति मिलेंगी, पड़ौस में इज्जत बढ़ेगी ऐसे ही जो भारतवर्ष में सब धर्मवाले भाई मिले रहेंगे क्लेश नहीं करेंगे तो सब सम्पत्ति मिलेंगी और राज्य भक्ति भी बढ़ेगी जियादा हक मिलेगा और विदेश में इज्जत बढ़ेगी ।

आप हरेक वाचक से प्रार्थना है कि उसका प्रचार अपने मित्रमण्डल में करें किताब खरीद कर बांटें बांटने वाले को आधे दाम में दी जायगी क्योंकि लेखक को और प्रसिद्धकर्ता को वाचक के आशीर्वाद के सिवाय और कोई आकांक्षा नहीं है उसका कोई भी भाषा में भाषांतर कराना या दूसरी आवृत्ति निकाल कर बांटना ये सब कार्य विद्वान् और धनाढ्यों का है और कोई विद्वान् परोपकारार्थ बांटने को अपना दिया द्रव्य

के ग्राहक लोग पढने के लिये मगावेंगे तो शीलिकानुसार सिर्फ डाकखर्च आने पर थोडी कॉपी भेजी जावेंगी और उस का अक्षर अक्षर पढकर जो उस में कोई भी अच्छी बात मालूम पडे तो ग्रहण करनी ।

जो धनाढ्य वा विद्वान् देश हित में प्रमाद करेंगे तो बिचारे गरीबों का वली कोई नहीं रहेगा सरकार एकली क्या करसकेगी अपने भाइयों की दया अपने भाइयों को भी नहीं तो हम आदमी ही नहीं हैं ।

हम क्या कर सकते हैं

१ पढा हुआ दूसरों को अवकाश में मुफ्त पढा सकता है।
२ धनवान् धन देसकता है।
३ साधु त्यागी देशहित समझा सकते हैं।
४ प्रेस अखबारवाले ऐसी किताबें उतारकर कम कीमत में छाप कर बांट सक्ते हैं।
५ गांव गाव पाठशाला ओर फ्रि लाइब्रेरी करसक्ते हैं
६ नहीं पढे हुओं को अच्छी किताबें सुनाकर अच्छे मार्ग में ला सकते हैं
७ हुक्का, सिगरेट, अफीम, मदिरा, (शराब) चरस, भाग वगैरेह का दूर करसक्ते हैं।
८, रण्डीबाजी जुवा व्यर्थ दिन गमाना यह सब सुधार करना हमारे हाथ में है यथा शक्ति कुछ करो।

प्रजाप्रिय यान सार्वजनिकहित कार्य म सहायता करना सब मनुष्यो का कर्त्तव्य होने पर भी मौज शोक में खर्च ने वाल अथवा अनुपयोगी कीर्तिकार्य में खरचने वाले अनेक मिलेंगे किं तु इस कार्य में सहायता देनी यह समझने वाले कम मिलते हैं इस लिये इस विभागमें द्रव्य सहायक का कुछ जीवन चरित्र देना भी उचित है जिमस परोपकारी कार्य में और भाई भी उद्यत होंग।



गुजरात प्रांतमें नडीआद खेडा जिलामें बडा शहर है वहां कालीदास जठाभाइ वैसा व्हापता वणिक् गृहस्थ रहते थे उन्होंन काठियावाड गाज स्टेटम वकीलात बहुत वरसतक कर लाखोंका और गउ का सुख दिया था उनके दो पुत्र नारण दास और मोहनलाल नाम के है नारणदास भाई पालीताना काठियावाड जा जैनिओंका प्राचीन तीर्थ है वहा स्टेट में नायब दीवान क ओहदे पर हैं उनका प्रजा प्रेम में इतनाही कहना बस होगा कि पालीताना में १९११ वरस पहिले जो रेल आई थी और हजारों घर मनुष्य पाय माल होगय थ उनकी स्थिति सुधारने का रात दिन प्रयास कर खुद स्टेट स और बाहरगाममें तारद्वारा खबर देकर हजारों रुपये मदद क मगाकर गरीबों का एनवक्त पर मदद देकर बचाये थे उस कार्य में जो फंड हुआ था व्यवस्था हुई थी उस म वाही मंत्री थे रात दिन तन मन धन से मदद करने स गरीबों का कष्ट दूर होगया व सब उपर्युक्त उपकार नारणदास का नहा भूलेंग।

नारणदास भाई के पाच पुत्र पाच रत्न समान हैं चार विद्याभ्या स में लगे है सब से बड़े भाई रतिलाल विद्याभ्यास कर व्यापार पद्धतिग्रहण कर दो बरस से देहलीमें रहते हैं और समय निकाल कर पाठशाला लाइब्रेरी पुस्तक प्रचार के काममें लगे हैं इस पुस्तक का सर्व खर्च उन्होंने ही दिया है और गुजराती होने पर भी हिन्दी भाषा के प्रचार में बड़ा उत्साह रखते हैं यह भी हिन्दी भाषा का अहोभाग्य है और छोटीवयमें देशहित के कार्य में उत्साह रखकर तन मन धन से मदद देते हैं इस लिये वे सहस्रवार धन्यवाद देने योग्य है इस लिये आशा है के विद्याप्रेमी बंधु इसी तरह सहायता कर के अपना नाम रोशन करेंगें ।

आपके सहस्त्राकांक्षी
मोहनलाल गोविंद जी जैनी

सार्वजनिक हित आदि पुस्तक मिलने का पता



१ आत्मानन्द पुस्तक प्रचारक मंडल नवघरा देहली और आगरा रोशन मोहल्ला

२ लाला बिहारीलाल गिरीलाल जैन बिनौली और बड़ौत जि० मेरठ

३ मेरठ आत्मलब्धि पवित्र जैन लाइब्रेरी

४ देहली आत्मानन्द जैन लाइब्रेरी छोटा दरीबा

५ भीमसिंह माणिक जैन बुकसेलर मुम्बई

६ माडल जैनमित्र मंडल सभा मांड जि० अहमदाबाद

७ हापुड़ सरस्वती पुस्तकालय

८ देवबंद वर्धमान पुस्तकालय जि० सहारनपुर



सरस्वती की समालोचना

— ※ —

सार्वजनिकहित, तीसरा भाग। लेखक, श्रीयुत मुनि माणिक; प्रकाशक, पण्डित गङ्गाशरण, पुस्तकाध्यक्ष, सरस्वती पुस्तकालय, हापुड़ (मेरठ) आकार मध्यम, पृष्ठ संख्या ३० मूल्य दो आने। प्रश्नोत्तरी के रूपमें लेखक ने परोपकार, सत्य बोलने, पापसे बचने और हिंसा न करने आदि की महत्ता इस में दिखाई गई है। लेखक की सम्मति है कि हमारे अधिकांश मन्दिर पुस्तकालयो और पाठालयों में परिवर्तित कर दिये जाँय और मन्दिरों में जो धन व्यय होताहै वह विद्या प्रचारमें लगाया जाय। पुस्तक प्रकाशक को लिखने से प्राप्त हो सकती है।